⚖️ Natural Law School (प्राकृतिक विधि का विद्यालय)

Point / विषय	Explanation / व्याख्या
Meaning (अर्थ)	Natural Law means law derived from **nature, reason, and morality**, not merely from the authority of the State.प्राकृतिक विधि वह है जो **प्रकृति, तर्क और नैतिकता** से उत्पन्न होती है, न कि केवल राज्य की आज्ञा से।
Main Idea (मुख्य विचार)	There exists a **higher moral or divine law** above all human laws.एक **उच्चतर दैवी या नैतिक कानून** है जो सभी मानव कानूनों से श्रेष्ठ है।
Objective (उद्देश्य)	To establish justice, morality, and human welfare in society.समाज में न्याय, नैतिकता और मानव कल्याण की स्थापना करना।
1. Socrates (सॉक्रेटीस)	Law is moral and based on human reason.कानून नैतिकता और तर्क पर आधारित है।
2. Plato (प्लेटो)	Law is a means to achieve justice and ideal society.कानून न्याय और आदर्श समाज की प्राप्ति का माध्यम है।
3. Aristotle (अरस्तू)	Law is reason free from passion; man is a rational being.कानून तर्क है जो भावना से मुक्त है; मनुष्य तर्कशील प्राणी है।
4. Cicero (सिसरो)	"True law is right reason in agreement with nature.""सच्चा कानून वह है जो प्रकृति के अनुरूप तर्कसंगत हो।"
ST. Augtine	St. Augustine believed that **law is given by God**, and the **Church and its priests (gurus)** interpret and teach the divine law as revealed in the **Holy Scriptures** (the Bible). सेंट ऑगस्टीन का मानना था कि **कानून ईश्वर द्वारा दिया गया है**, और **चर्च तथा उसके गुरु (पादरी)** पवित्र ग्रंथ (बाइबल) में वर्णित **दैवी कानून की व्याख्या और शिक्षा** देते हैं।
5. St. Thomas Aquinas (सेंट थॉमस एक्विनास)	Natural law is part of divine law; human law must follow it.प्राकृतिक कानून दैवी कानून का भाग है; मानव कानून को उसी का पालन करना चाहिए।
6. Grotius (ग्रोशियस)	Natural law exists even without God; based on human reason.प्राकृतिक कानून ईश्वर के बिना भी अस्तित्व में है; यह मानव तर्क पर आधारित है।
7. Fuller / Ryle (फुलर / रायल)	Law must be moral, fair, and ensure justice and equality.कानून नैतिक, न्यायपूर्ण और समानता पर आधारित होना चाहिए।
Principles (सिद्धांत)	- Law is based on morality and justice.- Law is universal and eternal.- Law is superior to human commands.- Law should promote human welfare. - कानून नैतिकता और न्याय पर आधारित है।- यह सार्वभौमिक और शाश्वत है।- मानव आज्ञाओं से श्रेष्ठ है।- मानव कल्याण को बढ़ावा देता है।
Criticism (आलोचना)	- Too idealistic and abstract.- Morality differs from society to society.- No clear method to identify natural law.- Modern laws are made by legislature. - यह बहुत आदर्शवादी और अमूर्त है।- नैतिकता हर समाज में अलग होती है।- प्राकृतिक कानून की पहचान स्पष्ट नहीं।- आधुनिक कानून विधान से बनते हैं।
Modern Relevance (आधुनिक महत्व)	- Basis of **Human Rights** and **Constitutional Law**.- Influences **International Law** and **Justice Theories**. - मानव अधिकार और संवैधानिक कानून का आधार।- अंतरराष्ट्रीय कानून और न्याय सिद्धांतों पर प्रभाव।

Point / विषय	**Explanation / व्याख्या**
Conclusion (निष्कर्ष)	Law must follow morality and justice; otherwise, it loses legitimacy.कानून को नैतिकता और न्याय का पालन करना चाहिए, अन्यथा वह वैधता खो देता है।**"Law without morality is empty; morality without law is powerless.""नैतिकता के बिना कानून खोखला है, और कानून के बिना नैतिकता असहाय है।"**

....

स्कूल आफ ला

प्राचीन काल 5वी बी सी से 3 बी सी

सुकरात, प्लेटो, अरस्तू , सिसरों 5–3 बी सी.

सुकरात – प्राकृतिक विधि अच्छी है , कानून तर्क संगत होना चाहिए।

सुकरात का मानना था कि जैसे प्राकृतिक भौतिक नियम होते हैं, वैसे ही एक प्राकृतिक नैतिक नियम भी है। मनुष्य अपनी आंतरिक अंर्तदृष्टि के द्वारा अच्छाई और बुराई को पहचान सकता है और इस प्रकार शाश्वत एवं परम नैतिक नियमों की खोज कर सकता है।

प्लेटो –

प्लेटो के अनुसार, विधि शिष्टाचार की सभ्यता है और वह मार्ग है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी आदिम पशुवत् अवस्था से आगे बढ़ता है। मनुष्य हमेशा उचित सामाजिक जीवन का सर्वोत्तम तरीका नहीं जानता, और यदि जान भी ले, तो स्वार्थ उसे नियंत्रित कर लेते हैं। विधि को निर्देशों द्वारा लागू किया जा सकता है, परंतु उपेक्षा होने पर दंड आवश्यक हो जाता है। फिर भी प्राकृतिक विधि का पालन करना नैतिक कर्तव्य है।

अरस्तू –

अरस्तू के अनुसार, मनुष्य प्रकृति का अंग है क्योंकि वह ईश्वर की रचना है और अपनी इच्छा से वह तर्क का सक्रिय उपयोग करता है। विधि एक शुद्ध उपदेश है, जो स्वाभाविक रूप से मानव कल्याण की ओर निर्देशित है। उन्होंने विधि को "भावनाओं से मुक्त तर्क कहा।

सिसरों – कानून प्राकृतिक नियमों का समंजस्य होना चाहिए।

सिसरो का मानना था कि विवेक संसार पर शासन करता है और विधि प्रकृति के पूर्ण सामंजस्य में है। यह सार्वभौमिक, अपरिवर्तनीय और शाश्वत है। विधि कर्तव्यों का आदेश देती है और बुरे कार्यों को निषिकर्य करती है। प्राकृतिक विधि का उल्लंघन करना स्वयं में अपराध है।

मध्य काल 4 – 14 ए डी

संत अश्वगस्टिन , संत थामस एक्विनास 4–14 ए डी.

संत अश्वगस्टिन –विधि ईश्वर की इच्छा है

संत अश्वगस्टिन के अनुसार, विधि की जड़ें ईश्वरीय आदेश में निहित हैं और इसकी सत्ता ईश्वर से प्राप्त होती है। उनका मानना था कि प्राकृतिक विधि, दैवीय विधि का एक भाग है और मानव निर्मित विधि को सदैव ईश्वर की उच्चतर विधि के अनुरूप होना चाहिए। यदि कोई मानव विधि दैवीय विधि का विरोध करती है तो वह वास्तविक विधि नहीं है।

संत थामस एक्विनास–

संत थामस एक्विनास ने प्राकृतिक विधि के सिद्धांत को व्यवस्थित रूप दिया। उनके अनुसार, प्राकृतिक विधि दैवीय विधि का एक भाग है और मनुष्य की बुद्धि उसे खोजने में सक्षम है। उन्होंने विधि के चार प्रकार बताए।

1, शाश्वत विधि ईश्वर की योजना, 2, दैवीय विधि धर्मग्रंथों में प्रकट, 3, प्राकृतिक विधि मनुष्य की बुद्धि से ज्ञात, और 4, मानव विधि शासकों द्वारा बनाई गई, परंतु तभी वैध जब यह प्राकृतिक विधि के अनुरूप हो।

पुर्न जागरण काल 15–16 ए डी

ग्रोटियस 15–16. ए डी.

पुनर्जागरण पर ग्रोटियस का प्रभाव

ग्रोटियस – प्राकृतिक विधि को धर्म से भिन्न किया। तथा अंतराटीए विधि की नीव रखी, तथा सामाजिक संविदा रुपी समाज की नींव रखी।

प्राकृतिक विधि का धर्मनिरपेक्ष आधार :– ग्रोटियस ने प्राकृतिक विधि के सिद्धांत को धार्मिक आधार से हटाकर तर्क और मानव विवेक पर स्थापित किया। उन्होंने तर्क दिया कि प्राकृतिक कानून तब भी अस्तित्व में रहेगा, यदि हम यह मान लें कि ईश्वर मौजूद नहीं है। इस विचार ने प्राकृतिक विधि के सिद्धांत को धर्मनिरपेक्षता की ओर मोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ग्रोटियस के विचारों ने पुनर्जागरण की मानवतावादी सोच को आगे बढ़ाया, जिसने मानव तर्क, विवेक और व्यक्तिवाद पर जोर दिया था। उनके काम ने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के धार्मिक आधार को कम करके उन्हें कानूनी और तर्कसंगत आधार प्रदान किया, जो उस समय यूरोप में चल रही धार्मिक उथल–पुथल के लिए महत्वपूर्ण था। इस तरह, उन्होंने न केवल पुनर्जागरण की बौद्धिक विरासत को अपनाया, बल्कि उसे अंतर्राष्ट्रीय कानून के रूप में एक नई दिशा भी दी।

आधुनिक काल प्रारम्भिक

हाब्स , लोके, रूसो ,17–18 ए डी

हाब्स – सामाजिक संविदा से सम्प्रभु

हाब्स के अनुसार, विधि शासक का आदेश है, जो मनुष्य की स्वार्थी और क्रूर प्रवृत्ति को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है। प्रकृतिक अवस्था में जीवन "एकाकी, निर्धन, घृणित, क्रूर और अल्पकालिक" था। इसलिए लोगों ने सामाजिक अनुबंध करके सत्ता शासक को सौंप दी और **विधि शासक की इच्छा बन गई।**

लोके – जीवन सवतंत्रा सम्पत्ती

प्राकृतिक अधिकार :– लाक ने तर्क दिया कि मनुष्य जन्म से ही कुछ प्राकृतिक अधिकारों के साथ पैदा होते हैं, जिनमें जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति का अधिकार शामिल है। उनका मानना था कि सरकार का मुख्य उद्देश्य इन अधिकारों की रक्षा करना है।

सीमित सरकार और सामाजिक संविदा:– उन्होंने इस सिद्धांत का खंडन किया कि राजाओं को शासन करने का दैवीय अधिकार प्राप्त है। इसके बजाय, उन्होंने सामाजिक संविदा का सि)ांत प्रस्तुत किया, जिसके अनुसार सरकार की शक्ति जनता की सहमति से आती है। यदि कोई सरकार इन अधिकारों की रक्षा करने में विफल रहती है, तो लोगों को उसे बदलने का अधिकार है।

रूसो – सामुहिक इच्छा जन सत्ता

सामान्य इच्छा :– जनरल विल, रूसो ने सामान्य इच्छा का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत दिया। उनके अनुसार, यह लोगों की वह सामूहिक इच्छा है, जो सभी के सामान्य हित के लिए काम करती है, न कि किसी एक व्यक्ति या समूह के स्वार्थ के लिए। सरकार का काम इसी सामान्य इच्छा को लागू करना है। रूसो का मानना था कि जो व्यक्ति सामान्य इच्छा का पालन नहीं करता, उसे स्वतंत्र होने के लिए मजबूर किया जा सकता है।

आधुनिक काल प्रारम्भिक

स्टेमलर , कोहलर , फुलर , राल्स . 19–20 ए डी

स्टेमलर – परिवर्तनशील विषयवस्तु वाला प्राकृतिक कानून

स्टैमलर ने तर्क दिया कि कानून की अंतर्निहित भावना यानी न्याय की अवधारणा तो सार्वभौमिक है, लेकिन इसकी विषयवस्तु सामाजिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती है।

न्यायपूर्ण कानून वह है जो समाज में लोगों के उद्देश्यों में सामंजस्य स्थापित करता है।

सम्मान का सिद्धांत यह सुनिश्चित करता है कि किसी की इच्छा दूसरे की मनमानी इच्छा के अधीन न हो।

सामुदायिक भागीदारी का सिद्धांत यह सुनिश्चित करता है कि समुदाय के सभी सदस्यों को सामाजिक निर्णय प्रक्रिया में शामिल किया जाए।

–कोहलर – संस्कृति के विकास से विधि

कोहलर ऐतिहासिक विधिशास्त्र के प्रवक्ता थे। उनके अनुसार, विधि मानव संस्कृति और सभ्यता की उपज है तथा यह समाज की प्रगति के साथ धीरे–धीरे विकसित होती है।

फुलर – विधि की आन्तरिक नैतिकता

फुलर ने विधि की "आंतरिक नैतिकता" पर बल दिया। उन्होंने आठ सिद्धांत बताए 1, स्पष्टता, 2, संगति, 3, भविष्यगामी प्रभाव, 4, सार्वभौमिकता, 5, पालन की संभावना, 6, नियम और क्रिया का सामंजस्य, 7, स्थिरता, और 8, प्रचार जो किसी विधिक प्रणाली को न्यायसंगत और प्रभावी बनाते हैं।

राल्स – न्याय को समानता के रुप में, प्राकृतिक विधि का आधुनिक रुप

राल्स ने "न्याय के रूप में निष्पक्षता" का सिद्धांत प्रस्तुत किया। उनके अनुसार, विधि और संस्थाएँ तभी न्यायसंगत हैं जब वे समान मौलिक अधिकार प्रदान करें, और सामाजिक–आर्थिक असमानताएँ तभी स्वीकार्य हैं जब वे समाज के सबसे वंचित वर्ग के हित में हों अंतर सिद्धांत ।

Natural Law School — Short Bilingual Table (with Time Periods)

प्राकृतिक विधि का विद्यालय — संक्षिप्त द्विभाषी तालिका (कालक्रम सहित)

Period / काल	Thinker (English) — विचारक (हिन्दी)	Main Idea / मुख्य विचार (Eng / हिंदी)
Ancient Period (5th–3rd c. BC)प्राचीन काल	Socrates — सॉक्रेटीस	Law is moral; discovered by reason. कानून नैतिक है; तर्क द्वारा जाना जाता है।
	Plato — प्लेटो	Law is a means to achieve an ideal, just society. कानून आदर्श एवं न्यायपूर्ण समाज प्राप्त करने का साधन है।
	Aristotle — अरस्तू	Law = reason free from passion; teleology of law. कानून = भावना रहित तर्क; कानून का उद्देश्यवादी स्वरूप।

Period / काल	Thinker (English) — विचारक (हिन्दी)	Main Idea / मुख्य विचार (Eng / हिंदी)
	Cicero — सिसरो	"True law is right reason in agreement with nature." "सच्चा कानून प्रकृति के अनुरूप तर्कसंगत है।"
Medieval Period (4th–14th c. AD)मध्यकाल	St. Augustine — सेंट ऑगस्टीन	Law derives authority from Divine will; divine command. कानून दैवी कहें से प्रेरित; ईश्वरीय आज्ञा।
	St. Thomas Aquinas — सेंट थॉमस एक्विनास	Natural law = part of Divine law; human law valid only if it conforms. प्राकृतिक कानून दैवी कानून का भाग; मानव कानून तभी मान्य जब वह उससे मेल खाए।
Renaissance / Early Modern (16th–17th c.)पुनर्जागरण / प्रारम्भिक आधुनिक	Hugo Grotius — ग्रोशियस	Natural law grounded in human reason; independent of theology. प्राकृतिक कानून मानव तर्क पर आधारित; धर्म से स्वतंत्र विचार।
Modern Period (17th–19th c.)आधुनिक काल	(influence) — Hobbes, Locke, Rousseau (contextual)हॉब्स, लॉक, रूसो (प्रासंगिक प्रभाव)	(Context) Social contract thinking shaped modern political ideas — background to law theories. सामाजिक अनुबंध ने आधुनिक राजनीतिक-विधिक विचारों का रूप दिया।
19th–20th Century (Modern Development)आधुनिक विकास काल	Fuller / Ryle / Later Thinkers — फुलर / रायल / बाद के विचारक	Emphasized inner morality of law, fairness, and social justice; modern re-articulation of natural law ideals. कानून की आंतरिक नैतिकता, न्याय व सामाजिक समानता पर जोर; प्राकृतिक विधि के आधुनिक रूप।

Quick Revision Points — संक्षेप (One-liners)

- Core idea / मूल भावना: Law is founded on reason, morality, and universal justice.
  कानून का आधार: तर्क, नैतिकता और सार्वभौमिक न्याय।
- Hierarchy / श्रेष्ठता: Natural/divine law > Human law.
  क्रम: प्राकृतिक/दैवी कानून > मानव-निर्मित कानून।
- Exam use: Mention period → name thinkers under that period → 1–2 line view each → conclude with modern relevance.
  परीक्षा उपयोग: काल कहा → विचारक लिखें → प्रत्येक का संक्षेप विचार दें → आधुनिक प्रासंगिकता बताकर समाप्त करें।

Schools of Law – Summary Table (कानून के प्रमुख विद्यालय)

S.No.	Name of School (English)	विद्यालय का नाम (Hindi)	Main Thinkers	Main Idea / Principle (मुख्य विचार)
1	**Natural Law School**	**प्राकृतिक विधि का विद्यालय**	Socrates, Plato, Aristotle, Cicero, St. Thomas Aquinas, Grotius	Law is based on **reason, morality, and justice**; it comes from nature or God. (कानून प्रकृति या ईश्वर से उत्पन्न नैतिकता और न्याय पर आधारित है।)

S.No.	Name of School (English)	विद्यालय का नाम (Hindi)	Main Thinkers	Main Idea / Principle (मुख्य विचार)
2	**Analytical / Positivist School**	**विश्लेषणात्मक / सकारात्मक विद्यालय**	Jeremy Bentham, John Austin, H. L. A. Hart	Law is the **command of the sovereign**; it is what is laid down by the State, not what "ought to be." (कानून वही है जो राज्य द्वारा बनाया गया है, न कि जो होना चाहिए।)
3	**Historical School**	**ऐतिहासिक विधि विद्यालय**	Savigny, Henry Maine	Law is the **product of people's customs and traditions**, not made by rulers. (कानून जनता की परंपराओं व रीतियों से उत्पन्न होता है, शासक से नहीं।)
4	**Sociological School**	**समाजशास्त्रीय विधि विद्यालय**	Auguste Comte, Roscoe Pound, Duguit, Ehrlich	Law should promote **social welfare** and adjust according to society's needs. (कानून का उद्देश्य समाज के कल्याण के अनुसार ढलना होना चाहिए।)
5	**Realist School**	**यथार्थवादी विधि विद्यालय**	Oliver Wendell Holmes, Karl Llewellyn, Jerome Frank	Law is what **judges actually do in courts**, not what is written in books. (कानून वही है जो न्यायालयों में व्यवहार में लागू होता है।)
6	**Philosophical / Ethical School**	**दार्शनिक / नैतिक विद्यालय**	Immanuel Kant, Hegel	Law is based on **justice, morality, and ethics** to achieve human welfare. (कानून न्याय, नैतिकता और मानव कल्याण पर आधारित है।)
7	**Functional / Modern School**	**कार्यात्मक / आधुनिक विद्यालय**	Talcott Parsons, Fuller, Ryle	Law functions as a **tool for social balance and justice.** (कानून समाज में संतुलन और न्याय बनाए रखने का माध्यम है।)

....

Ancient Period (5th Century BC – 3rd Century BC)

Thinkers: Socrates, Plato, Aristotle, and Cicero

Socrates (469–399 BC)

Socrates believed that Natural Law is good and that laws should be based on reason.
He said that just as there are natural physical laws governing the universe, there are also moral laws guiding human conduct.
According to him, a human being can distinguish between right and wrong through his rational thinking.
Thus, by understanding reason, man can discover moral and ideal laws that reflect universal goodness.

Plato (427–347 BC)

According to Plato, law is a means of social control, and it is the path through which man rises from his primitive condition to a civilized one.
Man does not always act in accordance with social order; therefore, laws are necessary to control human behavior.
Even if laws are imposed by authority and punishment follows disobedience, obedience to natural law remains a moral duty.

Plato's view was that although humans may not always pursue a perfect social life, law should guide them toward it.

Aristotle (384–322 BC)

Aristotle believed that man is a part of nature because he is the creation of God.
Through his free will, man uses his reasoning power to perform moral actions.
Law, according to Aristotle, is a rational principle that directs human behavior toward justice.
He said law is "a reason unaffected by desire."
Disobedience to natural law, therefore, is a crime against reason and nature itself.

Cicero (106–43 BC)

Cicero believed that law must be in harmony with natural law.
According to him, "True law is right reason in agreement with nature."
He maintained that law is universal, eternal, and moral.
It commands what is right, forbids what is wrong, and guides human life toward justice.
Violation of natural law, he said, is itself a sin.

Medieval Period (4th – 14th Century AD)

Thinkers: St. Augustine and St. Thomas Aquinas

St. Augustine (354–430 AD)

According to St. Augustine, law is the will of God.
He believed that all legal rules are contained in divine commands and derive their authority from God.
He stated that natural law is a part of divine law and that man-made laws must always conform to the higher, divine law.
If any human law conflicts with divine law, it cannot be regarded as true law.

St. Thomas Aquinas (1225–1274 AD)

Aquinas systematized the natural law theory.
He believed that natural law is part of divine law and that human reason can understand it.
He divided laws into four categories:

1. Eternal Law – the plan of God, governing the universe.
2. Divine Law – revealed through scriptures (religious laws).
3. Natural Law – known by reason; guiding moral conduct.
4. Human Law – made by rulers; valid only if it agrees with natural law.

Thus, according to Aquinas, man, by his rational nature, can understand divine intentions and frame laws accordingly.

Renaissance Period (15th – 16th Century AD)

Thinker: Hugo Grotius (1583–1645)

Grotius and His Influence

Grotius separated natural law from religion and laid the foundation for modern secular law.
He maintained that natural law is based not on God's will but on human reason and social utility.
He said: "Even if there were no God, natural law would still exist."
Thus, Grotius shifted the focus from theology to human reasoning and social welfare.
His ideas gave rise to modern international law and greatly influenced later legal thinkers.

Grotius emphasized that natural law is immutable, universal, and binding on all nations and individuals.

Modern Period (17th – 18th Century AD)

Thinkers: Hobbes, Locke, Rousseau, Bentham

Thomas Hobbes (1588–1679)

Hobbes connected his philosophy to the Social Contract Theory.
He believed law is the command of the sovereign — a necessary authority to control man's selfish and violent tendencies.
In the natural state, life was "solitary, poor, nasty, brutish, and short."
Hence, people entered into a social contract, surrendering their freedom to a ruler who maintained peace and order.
Thus, law became the will of the sovereign.

John Locke (1632–1704)

Locke's philosophy emphasized natural rights.
He said every human being is born with certain natural rights — life, liberty, and property.
The government's primary duty is to protect these rights.
If it fails to do so, the people have the right to remove it.
Locke favored limited government based on consent and rule of law.

Jean-Jacques Rousseau (1712–1778)

Rousseau believed that people were originally free, equal, and good, but society made them corrupt.
To restore freedom and equality, people formed a social contract based on the General Will — the collective will of all citizens.
Sovereignty lies not in the ruler but in the people.
Rousseau thus laid the foundation for democracy and popular sovereignty.

Jeremy Bentham (1748–1832)

Bentham introduced the Principle of Utility — "the greatest happiness of the greatest number."
According to him, the purpose of law is to promote the welfare and happiness of the people.
He rejected the idea of natural rights and emphasized positive law — law made by the legislature.
Bentham is regarded as the founder of Legal Positivism and Utilitarianism.

Modern Era (19th – 20th Century AD)

Thinkers: Stammler, Kohler, Fuller, and Ryle

Rudolf Stammler (1856–1938)

Stammler believed law is not fixed but constantly evolving according to social, moral, and cultural conditions.
He distinguished between the form and content of law — form remains universal, but content changes with society.
For him, true law must harmonize individual aims with social welfare.
His idea of "justice as social harmony" bridged the gap between natural law and sociology.

Kohler (1849–1919)

Kohler emphasized that law develops with civilization and culture.
He regarded law as a social product, which gradually evolves with human progress.
His ideas inspired the cultural theory of law, showing that legal systems change as societies evolve.

Lon L. Fuller (1902–1978)

Fuller introduced the concept of the "Inner Morality of Law."
He proposed eight principles that make law just and effective:

1. Clarity
2. Consistency
3. Prospective operation (not retroactive)
4. Universality
5. Possibility of compliance
6. Harmony between rule and procedure
7. Stability
8. Publicity
   Fuller argued that without these moral principles, no law can be truly valid or just.

Ryle (Modern Natural Law)

Ryle redefined natural law in a modern, rational, and humanistic sense.
He believed that justice exists only when social and economic equality are ensured.
He combined natural law with principles of social justice, fairness, and equality.

✅ Summary:
From Socrates to Ryle, natural law evolved from divine will to human reason and social welfare.
It moved from *religious morality* (Aquinas) to *rational secularism* (Grotius), and finally to *social justice and equality* (Ryle).
This evolution laid the foundation of modern jurisprudence, democracy, and human rights.